गोपियाँ श्रीकृष्ण के बुलाने पर जंगल में पहुँच गयी। श्रीकृष्ण ने ही तो उनके मन को चुराकर उन्हे वहा आने को विवश किया था।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

श्रीकृष्ण ने ऐसा दिखावा किया गोपियों के रात में जंगल में आने से वे आश्चर्य में पड गये थे। खुद ने ही गोपियों को वरदान दिया था। उस वरदान के अनुसार योगमाया की सहायता से रास का प्रबंध किया। मुरली की तान से गोपियों को बुलाया और जब गोपियाँ वहा गयी तो उनसे कहा,

"आइए! आइए! लेकिन ये बताइए कि इतनी रात में आप इस जंगल में क्यों आयी हो? क्या ब्रज में कोई संकट आया है? मैंने बहुत बार आपकी रक्षा की है। ऐसी कोई बात हो तो बताओ। अच्छा! पूर्णिमा की इस खूबसूरत रोशनी को देखने के लिए और इन खूबसूरत खिलने वाले फूलों को देखने के लिए आप यहा आयी हो! ये बडा ही आश्चर्य है कि छे ऋतुओं के फुल एकसाथ खिले है! यह अत्यंतही सुंदर और सुहावना दृष्य है! एक अलग ही खुशी का एहसास मन मे भर जाता है! लेकिन यह लंबे समय तक यहां रहना अच्छा नहीं है। क्योंकि आप यहाँ अचानक आपके परिवार को छोड के आयी हो। वे आपकी राह देख रहे होंगे। बच्चे आपके लिए रो रहे होंगे। आपको घर वापस जाकर अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। आप मुझे भगवान मानकर यहाँ आयी हो? तो सुनो। मेरे से दूर रहकर मेरे नाम, गुण, लीला आदि का संकीर्तन करना अधिक लाभदायक होता है। पास रहने से प्रेमास्पद में दोष दिखाई देने से नामपराध होता है। ओ! मैंने बांसुरी की तान छेडी तो आपको लगा कि मैंने यहाँ आने का निमंत्रण दिया। ऐसी कोई बात नही है। बांसुरी बजाना मेरा शौक है। निमंत्रण के बिना किसी के स्थान पर होना अच्छा नहीं है। अब जब आपने इस पूर्णिमा की रात की सुंदरता देखी है और आप सुनिश्चित हैं कि मैंने आपको नही बुलाया है, तो आपके घर वापस जाएं और अपने परिवार के सदस्यों की सेवा करें। "